श्री मध्यभारत साहित्य समिति, इंदौर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय शताब्दी साहित्य पुरस्कार तथा शताब्दी प्रादेशिक पुरस्कार में माननीय अध्यक्ष का भाषण

हिन्दी भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने और उत्कृष्ट लेखन के लिए दिए जाने वाले प्रतिष्ठित अखिल भारतीय शताब्दी साहित्य पुरस्कार और शताब्दी प्रादेशिक पुरस्कार वितरण समारोह में शामिल होकर मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है। मैं प्रोफेसर सूर्य प्रकाश चतुर्वेदी और श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के सभी सहयोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इन दो पुरस्कारों को प्रदान करने का सुअवसर दिया है।

मैं, समिति को हिन्दी साहित्य को बढ़ावा देने हेतु पुरस्कार आरंभ करने के लिए तथा डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य और डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को इस पुरस्कार के लिए चुने जाने पर निर्णायक समिति के विशिष्ट सदस्यों को अच्छा चयन करने के लिए बधाई देती हूँ। श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति अपने स्थापना काल से ही हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास और इसे प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान करती आ रही है।

डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य का व्यक्तित्व बहुआयामी है। एक शिक्षाविद् और समाज विज्ञानी होने के अलावा, वह एक कवि, नाटककार और उपन्यासकार भी हैं। सन् 1966 में प्रकाशित उनकी कृति 'गांधी दर्शन' के बारे में बहुत चर्चा होती है। हमारी संस्कृति, विरासत, परम्पराओं और दर्शन से संबंधित विविध विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। वह बहुभाषाविद् हैं। उन्हें अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कारों से नवाजा गया है। उन्होंने कई शैक्षणिक संस्थाओं का विकास किया है। उन्हें अखिल भारतीय शताब्दी साहित्य पुरस्कार प्रदान करके समिति ने इस पुरस्कार की गरिमा को और बढ़ाया है।

डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी, जिन्हें शताब्दी प्रादेशिक पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है, एक ऐसे सुविख्यात हिन्दी विद्वान हैं। जिन्होंने अपने योगदान और प्रतिबद्धता से भाषा और साहित्य को समृद्ध किया है। वह इसलिए भी सुयोग्य पात्र हैं क्योंकि वह एक हृदय रोग चिकित्सक हैं। जिन्होंने मुख्य चिकित्सा अधिकारी के रूप में भी कार्य किया है। किन्तु डॉक्टर होने के साथ-साथ, वह एक लोकप्रिय व्यंग्यकार, नाटककार, उपन्यासकार भी हैं। वह कॉलम लिखते हैं। उन्होंने कई किताबें भी लिखी हैं। देश-विदेश में अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं। विख्यात

हिन्दी विद्वानों के लिए यह उचित सम्मान है और निस्संदेह, डॉ. भट्टाचार्यजी और डॉ. चतुर्वेदी जी को सम्मानित करके हम अपने इतिहास, अपनी संस्कृति और अपनी दार्शनिक, वैज्ञानिक और कलात्मक परम्पराओं का मान बढ़ा रहे हैं।

इंदौर कला और साहित्य को प्रोत्साहित करने में सदैव अग्रणी रहा है। होलकर राज्य के समय में इंदौर साहित्यिक केंद्र के रूप में फला-फूला। इंदौर का साहित्यिक इतिहास श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के योगदान के उल्लेख के बिना अधूरा रहेगा। इस समिति की स्थापना सौ साल पहले हमारे राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी की प्रेरणा से ही हुई। सरदार माधव राव किबे , सेठ हुकम चंद, सर सिरेमेल बापुआ, गिरिधर शर्मा, डॉ सरजू प्रसाद तिवारी, शिव सेवक तिवारी, डॉ पंडित और अन्य अनेक विद्वानों द्वारा समिति के कार्यकलापों को बढ़ावा देने के लिए की गई नःस्वार्थ सेवा उल्लेखनीय है। यह समिति हिन्दी साहित्यिक गतिविधियों के विकास का प्रमुख केंद्र है। अपने स्थापना काल से ही समिति, भारतीय साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास कर रही है।

इंदौर में पहले हिन्दी संपादक सम्मेलन का आयोजन 1932-33 में हुआ। वर्ष 1941 में महू में मध्यभारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन हुआ। यह इंदौर में हिन्दी पत्रकारिता को बढ़ावा देने का एवं शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। समिति ने चेन्नई में हिन्दी प्रचार सभा तथा वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी और संस्कृत में उच्चस्तरीय शोध को बढ़ावा देने के लिए समिति शोध केन्द्रों का संचालन भी करती है जो देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं। समिति द्वारा स्थापित समसामयिक अध्ययन केंद्र विभिन्न सामाजिक मुद्दों के बारे में जागृति विकसित करने में सराहनीय सेवा प्रदान कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य, डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी और मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति अपने अथक प्रयासों से हमारी गौरवशाली विरासत का परिरक्षण और संरक्षण करते रहेंगे।

इस अवसर पर मैं हिन्दी को प्रोत्साहित करने में अत्यधिक सराहनीय सेवाएं प्रदान कर रही श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति को भी शुभकामनाएं देती हूँ।